#FosterChildFindFamily

Adoption Awareness Month 2024

किलकारियाँ

बाल दत्तक-ग्रहण की प्रेरक कहानियाँ

सीईओ का संदेश

हमारे बच्चे समाज को नई ऊंचाइयों पर ले जाने वाले वाहक हैं। हम उन बच्चों के सर्वोत्तम हितों को सुरक्षित करने की अपनी प्रतिबद्धता पर गर्व करते हैं, जिनके पास एक प्यार करने वाले परिवार का साथ नहीं है।

समय के साथ, हमारे पास प्रेरक किस्से एकत्रित हुए हैं जो दिखाते हैं कि कैसे समर्पित टीम वर्क और समय पर हस्तक्षेप के साथ, हम देखभाल और सुरक्षा की आवश्यकता वाले बच्चों के जीवन में वास्तविक अंतर ला सकते हैं।

यह दस्तावेज़ उन बच्चों की कहानियों को साझा करता है जिन्हें अपने-अपने दत्तक परिवार का साथ मिल गया है। इनमें से प्रत्येक कहानी बच्चों के उज्जवल भविष्य की नई आशा को दर्शाती है। मुझे इन सर्वोत्तम प्रथाओं को प्रस्तुत करने पर गर्व है जो बच्चों के लिए प्यार और देखभाल सुनिश्चित करने वाले घरों को खोजने में सहायक रही हैं। इन्हें विभिन्न श्रेणियों में सोच-समझकर इस दस्तावेज़ में समायोजित किया गया है। यह उपलब्धि राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और हमारे साझा मिशन में सभी हितधारकों के सार्थक योगदान को दर्शाती है।

फॉस्टर दत्तक-ग्रहण की कहानियाँ

सहनशक्ति की यात्रा

राजेश का जीवन तमिलनाडु की सड़कों पर शुरू हुआ था। जब उसकी माँ का निधन हो गया और पिता की जानकारी नहीं मिली, तब महज़ 12 साल की उम्र में उसे एक बाल आश्रय गृह भेज दिया गया।

कुछ सालों बाद, राजेश को एक फॉस्टर परिवार का साथ मिला, जहां उसने दत्तक माता-पिता के साथ जल्द ही मजबूत संबंध स्थापित किए। यह संबंध फॉस्टर दत्तक-ग्रहण में बदल गए, जिससे उसे वह स्थिरता मिली जिसे वह हमेशा चाहता था।

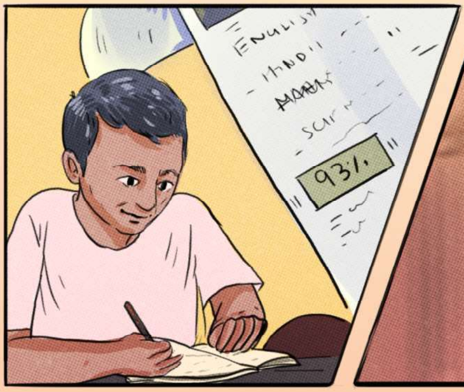

इस पारिवारिक वातावरण में, राजेश ने शैक्षिक स्तर पर बेहतरीन प्रदर्शन किया और अपनी 12वीं कक्षा की परीक्षा में 93% अंक प्राप्त किए।

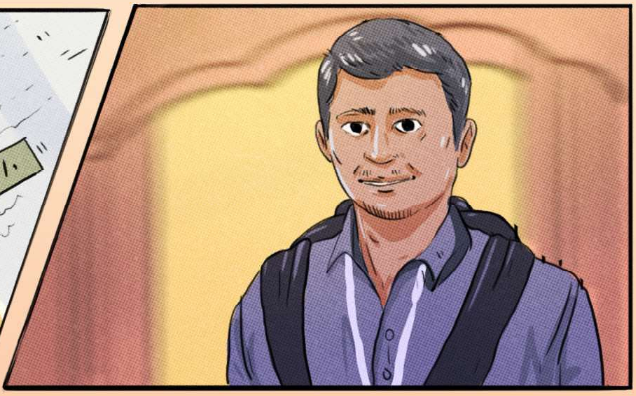

अब वह इतिहास विषय में बीए कर रहा है और अपने जीवन को ऊँचे लक्ष्य और मज़बूत पारिवारिक संबंधों के साथ जी रहा है। उसकी कहानी परिवार के प्यार के अद्वितीय प्रवाह की गवाह है।

अपनेपन का मार्ग

संदीप की कहानी 2020 में शुरू हुई जब उसे 10 साल की उम्र में बाल आश्रय गृह लाया गया था। उसके वास्तविक परिवार का पता लगाने की प्रक्रिया के दौरान 2021 में उसे देखरेख के उद्देश्य से एक फॉस्टर परिवार में भेजा गया।

संतान के सुख से वंचित दंपती ने संदीप को अपने जीवन में स्थान दिया और उसे गोद लेने का निर्णय लिया। इस बीच, संदीप को विधिक रूप से गोद लेने के लिए मुक्त कर दिया गया।

अब एक खुशहाल, 5वीं कक्षा का छात्र संदीप, अपने नए परिवार में प्यार और सुरक्षा के माहौल में आगे बढ़ रहा है।

उम्मीद की किरण

ऐना की यात्रा अड़चनों से शुरू हुई। वह किसी तरह दिल्ली पहुंच गई और पैतृक गाँव जो संभवतः बिहार या झारखंड में था, उसका पता नहीं चल पा रहा था।

उसे एक बाल देखरेख संस्था में रखा गया और 2021 में एक फॉस्टर परिवार ने उसे अपनाया।

इस परिवार ने पहले एक बेटी गोद ली थी और अब वे अपने परिवार को बड़ा करने के लिए उत्साहित थे। बहनें जल्दी ही एक-दूसरे के करीब आ गईं।

ऐना, जो अब NIOS (5वीं कक्षा) में अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता प्राप्त कर रही है, उसने अपने भाषाई कौशल में अद्वितीय सुधार दिखाया है। स्नेह के वातावरण में, वह अपने नए जीवन का आनंद ले रही है।

शक्ति और आशा की कहानी

बोरिस को बचपन में ही त्याग दिया गया था, जिस कारण 7 साल की उम्र में उसे एक बाल देखरेख संस्था में भेजा गया। 2013 में उसे एक फॉस्टर परिवार का साथ मिला, जहां उसने अदम्य जीवटता की धनी अपनी माँ, मिस ऐनिस के साथ अपने जीवन की नई शुरुआत की।

हालांकि, 2017 में मिस ऐनिस के पति की मृत्यु हो गई। यह समय बोरिस के लिए भी पीड़ादायी था, क्योंकि उसने अपने फॉस्टर पिता से गहरा रिश्ता बना लिया था।

चुनौतियों का सामना करते हुए, बोरिस ने अपनी फॉस्टर माँ के साथ स्थिरता और देखभाल का अनुभव किया और 2019 में उसे कानूनी रूप से गोद ले लिया गया।

अब वह 10वीं कक्षा के बाद IT कोर्स कर रहा है और परिवार के सहयोग से उसके आत्मविश्वास में काफी सुधार आया है।

गोद लेने का रास्ता

गीता का जन्म 2013 में हुआ था। माता-पिता द्वारा परित्यक्त किए जाने के बावजूद उसका सगा भाई अपने दत्तक-ग्रहण के खिलाफ था।

ऐसे में सही काउंसलिंग प्रदान करने और गीता की अनुमति लेने के बाद, उसे अपने भाई से अलग फॉस्टर केयर के लिए भेजा गया। गीता के फॉस्टर माता-पिता जो एक बच्चे को अपनाने के लिए बेताब थे, उन्होंने खुले दिल से गीता का अपने घर में स्वागत किया।

विगत वर्षों के दौरान, गीता ने अपने नए परिवार के साथ गहरा संबंध स्थापित किया और अब वह शैक्षिक दृष्टिकोण से भी सफल हो रही है। यह साबित करता है कि प्यार और समर्थन से, सबसे चुनौतीपूर्ण प्रारंभ का प्रारब्ध भी उज्जवल भविष्य किया जा सकता है।

एक परिवार की खोज

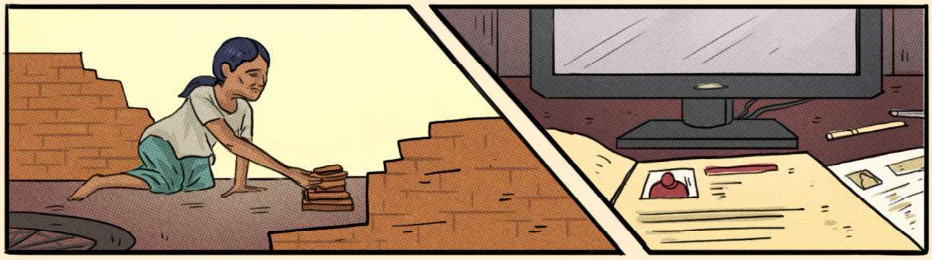

2016 में बाल मज़दूरी से मुक्त करवाए जाने के बाद अनुष्का को जेजे अधिनियम, 2015 के तहत उसके वास्तविक परिवार से मिलवाने के सभी प्रयास किए गए।

हालांकि, 2018 में परिवार की खोज उसे एक फॉस्टर परिवार के पास ले गई, जहां 2023 में उसे विधिक रूप से दत्तक-ग्रहण के लिए मुक्त कर दिया गया। अब वह 10वीं कक्षा में है और एक अनुकूल वातावरण में आगे बढ़ रही है, जो उसकी कर्मठता को प्रोत्साहित कर रहा है।

अनुष्का ने अपने फॉस्टर माता-पिता के साथ मज़बूत मैत्री बनाई थी और दत्तक-ग्रहण के बाद से उन्हें अपने वास्तविक परिवार मानती है। उसकी कहानी पारिवारिक देखभाल और अपनेपन की सुरक्षा की मिसाल है।

फरहीन

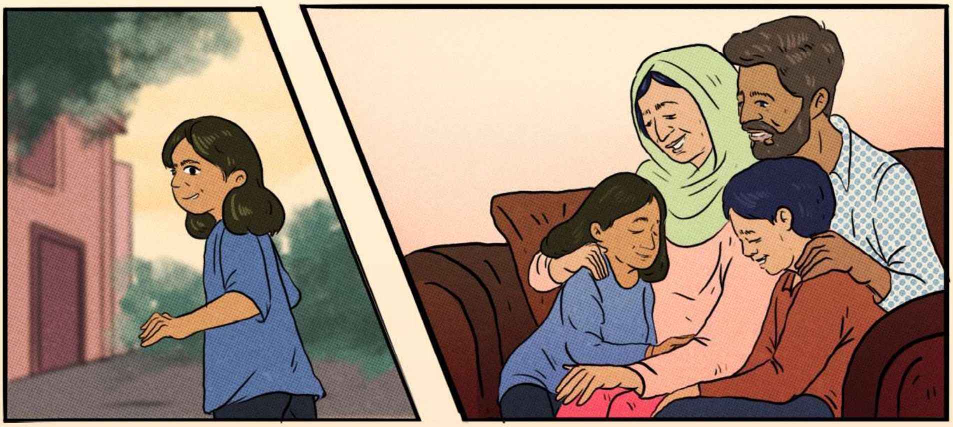

अपने माता-पिता को खोने और एक अन्य परिवार के साथ चुनौतीपूर्ण बचपन बिताने के बाद, फरहीन को 5 साल की उम्र में एक बाल देखरेख संस्था में भेजा गया। 2020 में उसे एक फॉस्टर परिवार से जुड़ने का अवसर मिला, जिन्होंने उसे गोद लेने की इच्छा जताई। उनके घर में पहले से उनका एक बेटा था, लेकिन उन्होंने फरहीन को अपनाया और समान रूप से प्यार दिया।

तीन वर्षों की देखभाल और सहायता के बाद, फरहीन अब स्कूल में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही है और अपने नए परिवार के साथ मज़बूत रिश्ते बना रही है। हाल ही में उसे विधिक रूप से दत्तक-ग्रहण के लिए मुक्त कर दिया गया, जो स्थिरता की ओर एक कदम था।
उसके फॉस्टर माता-पिता, जो एक बेटी का स्वागत करने के लिए उत्साहित थे, उन्होंने फरहीन के लिए एक ऐसा वातावरण तैयार किया है जिसमें प्यार, खुशियां और अनगिनत संभावनाएँ हैं।

अंतर-देशीय दत्तक-ग्रहण के लिए गए ‘विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों’ की कहानियाँ

नई ज़िंदगी की आशा

आठ साल तक निस्संतान रहने के बाद, अमेरिका के एक दंपती ने CARA के माध्यम से दत्तक-ग्रहण का निर्णय लिया। 2023 में उन्होंने ‘आशा’ को अपनाया। एक साल की आशा जन्म से ही दिल की बीमारी से पीड़ित थी।

प्रार्थनाओं और परिवार की दुआओं से वह जीवित रही और 13 अप्रैल, 2024 को उसने अमेरिकी नागरिकता प्राप्त की। अब उसका नया घर खुशियों से भरा हुआ है।

दत्तक-ग्रहण की अनुवर्ती रिपोर्ट्स में भी आशा अपने परिवार के साथ प्रसन्न दिखाई देती है। यह दत्तक-ग्रहण उसे प्यार, देखभाल और सहयोग प्रदान करते हुए उसे नए वातावरण में समायोजित करने में मददगार रहा है।

इतालवी सपने

इटली में एक दंपती का माता-पिता बनने का सपना तब सच हुआ जब उन्होंने दत्तक-ग्रहण का मार्ग अपनाया। उन्होंने CARINGS पर पंजीकरण किया और अक्टूबर 2023 में एक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को अपनाया।

बच्चे में अस्पष्ट लिंग और जन्मजात अड्रेनल हाइपरप्लेशिया की पहचान हुई थी।

भावी दत्तक माता-पिता (PAPs) ने 6 नवंबर, 2023 को बच्चे को गोद लेने की प्रक्रिया के लिए स्वीकार किया। कड़ी जांच के बाद CARA ने 29 फरवरी, 2024 को भावी दत्तक माता-पिता के पक्ष में एक अनापत्ति प्रमाणपत्र (NOC) जारी किया।

फरवरी 2024 में NOC जारी होने के बाद उन्होंने खुशी-खुशी बच्चे को अपने संरक्षण में लिया। गोद लेने की प्रक्रिया 14 मार्च, 2024 को पूरी हुई और उनकी बेटी 17 सितंबर, 2024 तक इटली की नागरिक बन गई। यह सफर निशर्त प्रेम और पारिवारिक सौंदर्य की मिसाल है।

एकल मां की सफलता

स्पेन की एक दृढ़ महिला जिसने मातृत्व का सपना देखा था, उसने CARINGS पर अपना पंजीकरण किया।

CARA से स्वीकृति मिलने के बाद उसने CARINGS पर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समर्पित पोर्टल का उपयोग किया और एक बच्ची को गोद लेने के लिए आरक्षित किया। बच्ची HIV और सेरेब्रल पॉल्ज़ी से पीड़ित थी।

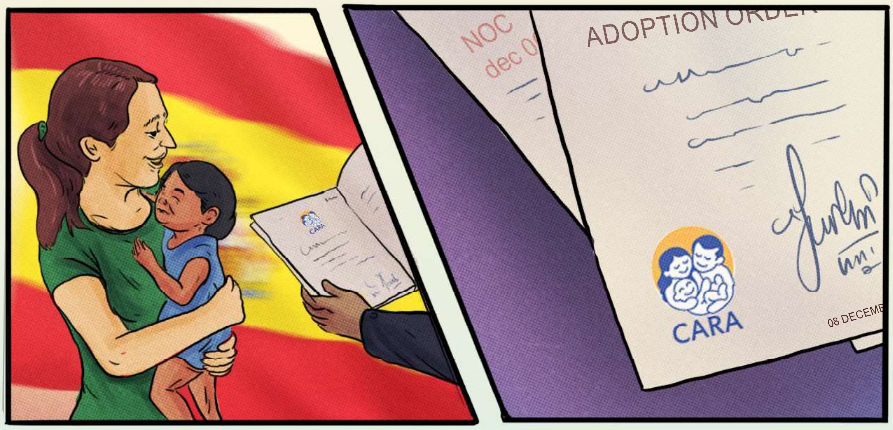

22 सितंबर, 2023 को इस बच्ची को आरक्षित किया गया और 6 अक्टूबर, 2023 को उसे गोद लेने के लिए स्वीकार किया गया। मामले के गहन विश्लेषण के बाद, CARA ने 26 दिसंबर, 2023 को दत्तक-ग्रहण के पक्ष में एक अनापत्ति प्रमाणपत्र (NOC) जारी किया।

8 जनवरी, 2024 को नागालैंड के ज़िला मजिस्ट्रेट द्वारा दत्तक-ग्रहण आदेश जारी किया गया और 24 फरवरी, 2024 को बच्ची को दत्तक माता-पिता के साथ उनके देश भेजा गया। 11 मार्च, 2024 को बच्ची को नागरिकता प्रदान की गई।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

Adoption Awareness Month 2024

CARA

रिश्तेदारी और सौतेले परिवार में दत्तक-ग्रहण की कहानियां

चंदन का खिलता परिवार

आंध्र प्रदेश के समुद्र तटीय शहर विशाखापत्तनम में COVID-19 महामारी के दौरान अपने पति को खोने के बाद श्रीमती लक्ष्मी के जीवन में एक नया मोड़ आया। श्री आनंद, जो अपनी पहली पत्नी खो चुके थे, उन्होंने मई 2022 में लक्ष्मी से शादी की।

1 मार्च 2019 को जन्मे लक्ष्मी के बेटे चंदन ने आनंद के तीन बच्चों—अंजू, समीक्षा और कार्तिक के साथ एक नया परिवार पाया। साथ मिलकर, उन्होंने नए पारिवारिक संबंधों में आई चुनौतियों का सामना किया और अपने साझा दुख को आपसी समन्वय में बदल दिया।

जुलाई 2024 में CARA ने चंदन को गोद लेने के लिए पूर्व अनुमोदन जारी किया, जो परिवार के लिए एक खुशी का क्षण था। तीनों बच्चों ने खुशी से चंदन को अपना भाई स्वीकार किया, और अब वे भविष्य को एक साथ, हाथ में हाथ डालकर, प्यार और अपनेपन के साथ अपनाने के लिए तैयार हैं।

जैक का सौतेले परिवार में दिल से स्वागत

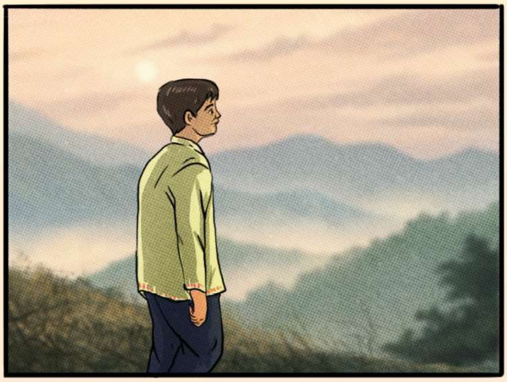

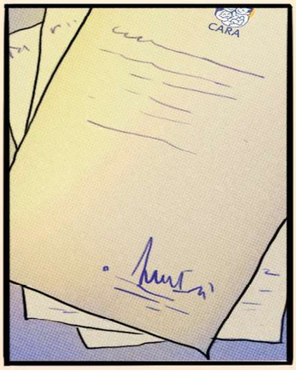

मिज़ोरम की सुंदर वादियों में रहने वाला 17 वर्षीय जैक वयस्क होने की कगार पर था, जब उसके जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव शुरू हुआ। उसके सौतेले पिता श्री सैम ने उसे आधिकारिक रूप से गोद लेने की इच्छा जताई, ताकि उनके रिश्ते को कानूनी मान्यता मिल सके। यह यात्रा 14 नवंबर 2023 को शुरू हुई, जब उन्होंने CARA के पास दत्तक-ग्रहण के लिए पंजीकरण कराया। केवल दो दिन बाद ज़िला बाल संरक्षण इकाई (DCPU) ने उनके आवेदन को सत्यापित कर दिया। 17 नवंबर को CARA ने एक पूर्व अनुमोदन पत्र जारी किया, जो उनके संकल्प की दृढ़ता को दर्शाता था।

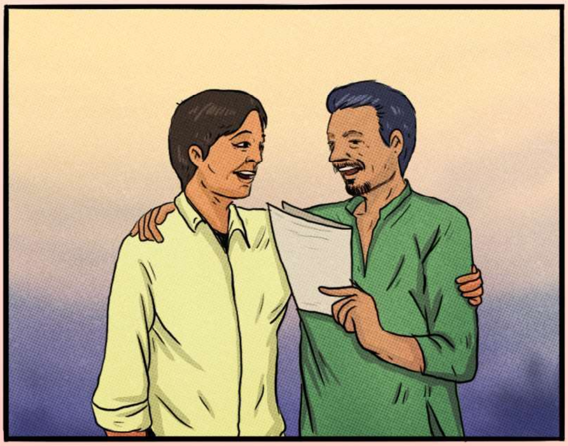

28 नवंबर को आईज़ॉल के ज़िला मजिस्ट्रेट ने आधिकारिक दत्तक-ग्रहण आदेश जारी किया, और यह प्रक्रिया केवल 14 दिनों में पूरी हो गई। अब जैक गर्व से अपने सौतेले पिता का नाम धारण करता है, और वह एक ऐसे परिवार में सुरक्षित और स्नेहिल महसूस करता है जो उसे पूरी तरह से अपना रहा है। अपने भविष्य को गले से लगाने के लिए तैयार, जैक का दिल अपने सौतेले पिता श्री सैम के साथ साझा किए गए इस रिश्ते के लिए आभार से भर उठा है।

अहल्या की नई शुरुआत

अक्टूबर 2005 में जन्मी अहल्या केरल राज्य की एक जीवंत और उत्साही लड़की थी। माता-पिता न होने के कारण वह अपने रिश्तेदारों के साथ रहती थी और वह 18 साल की होने वाली थी।

अपने रिश्तेदारों श्री देव और श्रीमती शुभांगी के प्यार में पली-बढ़ी अहल्या ने जैसे ही अपने जन्मदिन की तैयारी शुरू की, उन्होंने रिश्ते को कानूनी रूप से मान्यता देने का विचार किया। इस विचार के साथ ही, देव और शुभांगी ने 20 जून 2023 को CARA में पंजीकरण कराया। देव और शुभांगी ने 3 अक्टूबर को आवश्यक दस्तावेज़ CARA में प्रस्तुत किए, और एक ही दिन में उन्हें पूर्व अनुमोदन प्राप्त हो गया। 9 अक्टूबर को ज़िला मजिस्ट्रेट ने दत्तक-ग्रहण आदेश जारी किया, जिसने अहल्या को उनकी प्रिय बेटी के रूप में मान्यता दी। यह प्रक्रिया केवल 3 महीने और 19 दिनों में पूरी हो गई, जिसमें अंतिम चरण केवल 6 दिनों में पूरा हुआ। अहल्या ने अपना 18वां जन्मदिन प्यार और आभार की मिली जुली भावना के साथ मनाया। वह जानती थी कि वह एक ऐसे परिवार का हिस्सा है जो उसे सच्चे दिल से अपनाएगा।

हरमीत का नया अध्याय

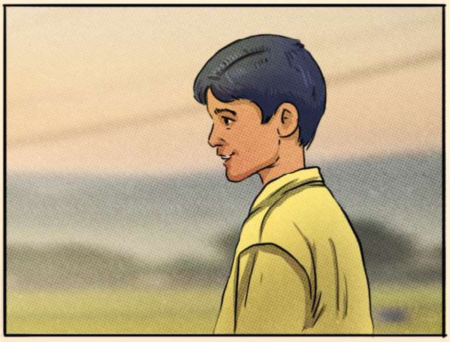

हरियाणा में, हरमीत अपना 18वां जन्मदिन मनाने वाला था जब उसके सौतेले पिता श्री सुमित ने उनके रिश्ते को औपचारिक मान्यता देने का निर्णय लिया। उन्होंने 26 दिसंबर 2023 को CARA में सौतेले माता-पिता द्वारा गोद लेने के लिए पंजीकरण कराया, और यह एक नए अध्याय की शुरुआत थी। संबंधित ज़िला बाल संरक्षण इकाई ने 25 जनवरी 2024 तक आवेदन की पुष्टि की, और SARA ने 26 फरवरी 2024 को आवश्यक दस्तावेज़ CARA को प्रस्तुत किए। उसी दिन, ज़िला मजिस्ट्रेट ने गोद लेने का आदेश जारी किया।

सिर्फ 60 दिनों में पूरी हुई यह प्रक्रिया, हरमीत को गहरे संतोष और अपनेपन का एहसास दिलाती है। अब उसे श्री सुमित के बेटे के रूप में कानूनी मान्यता मिल चुकी है, और वह अपने परिवार के साथ अपने भविष्य को प्यार और आत्मविश्वास के साथ देख रहा है, साहसिक कार्यों की ओर कदम बढ़ाते हुए।

HAMA के तहत अंतर-देशीय दत्तक-ग्रहण की कहानियां

मनमीत कौर: परिवार की यात्रा

पंजाब में पली-बढ़ी मनमीत ने अपने जीवन के शुरुआती दिनों में कई चुनौतियों का सामना किया।

सिर्फ पाँच साल की उम्र में अपने पिता को खोने के बाद माँ ने भी उसका दामन छोड़ दिया। इसके बाद मनमीत अपने बुजुर्ग दादा-दादी की देखभाल में रहने लगी।

उम्र की सीमाओं को पहचानते हुए मनमीत की चाची ने उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए कदम बढ़ाया।

HAMA प्रक्रिया के माध्यम से कानूनी रूप से गोद ली गई मनमीत अब स्पेन में अपनी चाची के साथ रह रही है। एक यात्रा जो निजी क्षति से शुरू हुई, अब एक खूबसूरत परिवार और आशा की कहानी में बदल गई है।

दयाल: दिल टूटने से नई ज़िंदगी की ओर

सिर्फ तीन साल और छह महीने की उम्र में दयाल ने अपने पिता को खोकर एक त्रासदी का सामना किया। अपनी मामी द्वारा पाले जाने पर उसे वापस परिवार के संबंधों में सुकून मिला।

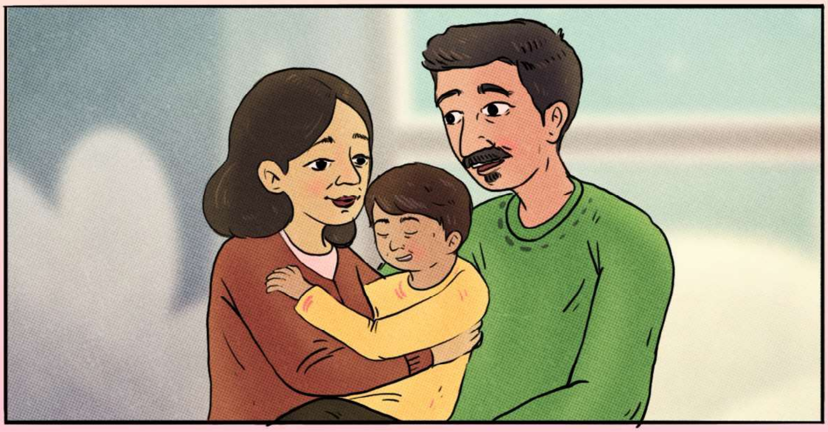

हालांकि महामारी के दौरान अपनी मां के निधन के बाद, उसके मामा-मामी ने यूनाइटेड किंगडम से आकर यह सुनिश्चित किया था कि वह सुरक्षित रहे और उसे प्यार मिले।

त्वरित कार्रवाई करते हुए और HAMA के माध्यम से दयाल को कानूनी रूप से गोद लिया गया। इससे एक दुखद जीवन नई शुरुआत में बदल गया, जो गर्मजोशी और वादे से भरा था। अब वह मुस्कान के साथ भविष्य की ओर देखता है, उस परिवार की गोद में जो उसे संजोता है।

विशेष मामले - कारा का हस्तक्षेप

अविनाश की सफलता की कहानी

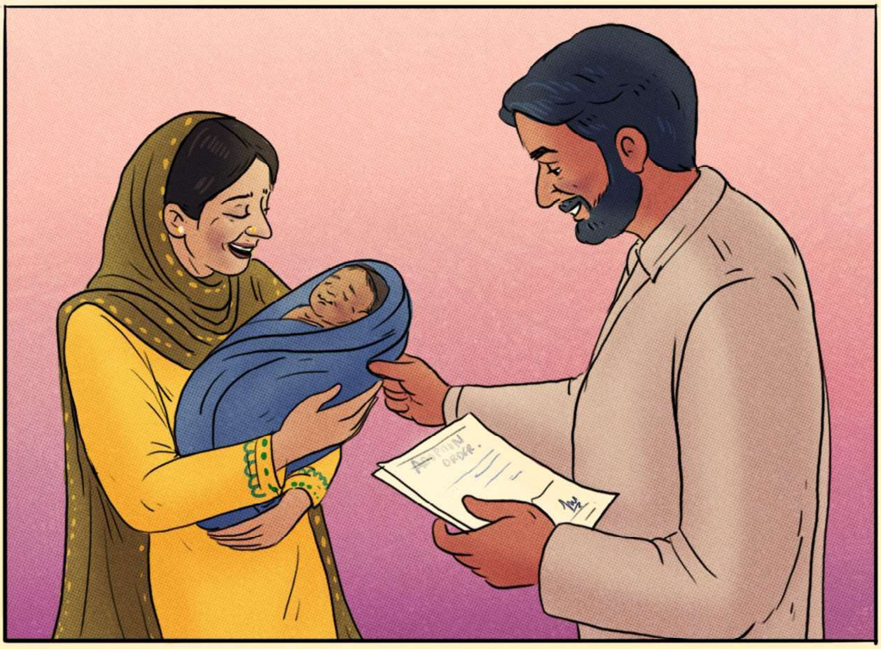

अविनाश 4 जनवरी 2024 को जन्मा एक अभ्यर्पित (surrendered) बच्चा है। उसने दत्तक माता-पिता और अधिकारियों की जीवटता के माध्यम से एक प्यार करने वाला परिवार पा लिया है। हालांकि शुरुआत में पंचकुला, हरियाणा में दत्तक-ग्रहण एजेंसी ने उसके दत्तक माता-पिता की कम आय के कारण उसके दत्तक-ग्रहण को अस्वीकार कर दिया गया था, लेकिन परिवार ने CARA से अपील की।

हरियाणा के SARA के तहत गोद लेने वाली समिति द्वारा गहन समीक्षा के बाद, उन्हें उपयुक्त माना गया। अविनाश अब अपने गोद लेने वाले माता-पिता के साथ प्री-अडॉप्शन फॉस्टर केयर में फल-फूल रहा है और एक खुशहाल यात्रा पर निकल पड़ा है।

सुप्रिया की सफलता की कहानी

सुप्रिया ने, जो 16 अक्टूबर 2020 को जन्मी एक परित्यक्त (abandoned) बच्ची है, प्रारंभिक चुनौतियों के बावजूद एक आसरा पा लिया है। हालांकि भावी दत्तक माता-पिता के वित्तीय कारणों से उसके गोद लेने के आवेदन को अस्वीकार कर दिया गया था, लेकिन CARA ने हस्तक्षेप किया जिससे दिल्ली के प्रिंसिपल सेक्रेटरी-कम-डिविज़नल कमिश्नर द्वारा एक समीक्षा की गई।

उनके आकलन ने सुप्रिया की एकल दत्तक माता की वित्तीय स्थिरता की पुष्टि की गई। दत्तक-ग्रहण सफलतापूर्वक पूरा किया गया, जिससे सुप्रिया का प्यार भरा और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित हुआ।

कमला की सफलता की कहानी

28 सितंबर 2022 को जन्मी कमला एक अभ्यर्पित (surrendered) बच्ची है। उसे अनिश्चितता का सामना करना पड़ा जब उसके दत्तक-ग्रहण के आवेदन को प्रारंभ में उसके गोद लेने वाले माता-पिता की उम्र के कारण अस्वीकार कर दिया गया।

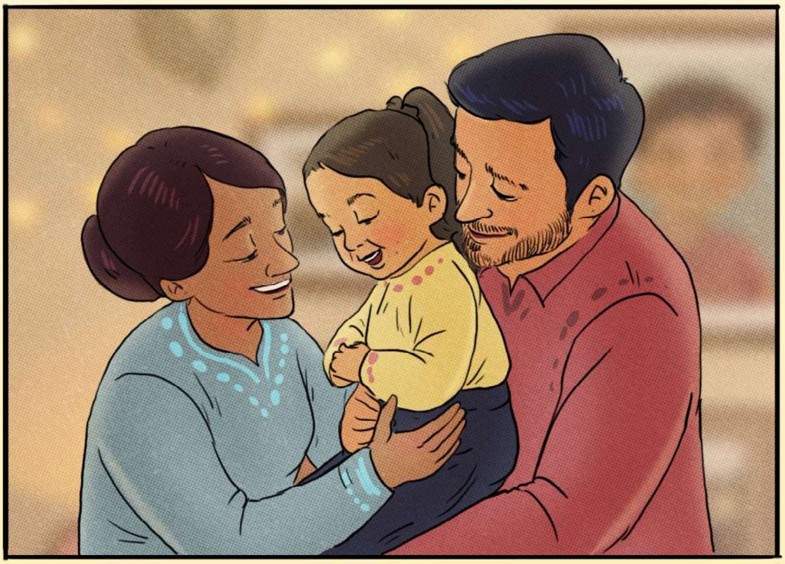

हालांकि, CARA ने हस्तक्षेप किया, और मामला राज्य के कमिश्नर के पास बढ़ाया गया, जिन्होंने कमला के सर्वोत्तम हितों को प्राथमिकता दी। ज़िला मजिस्ट्रेट ने निर्णय को संशोधित किया, जिससे कमला अपने स्नेहिल दत्तक माता-पिता के साथ रह सके। अंततः दत्तक-ग्रहण पूरा किया गया, जिससे उसे एक स्थिर और स्वस्थ वातावरण मिला।

बाधाओं से आधिकारिक हस्तक्षेप का सफर: श्रीमती तवलीन और जिग्गी

श्रीमती तवलीन ने दिल्ली के एक बाल देखरेख गृह से जिग्गी को रिज़र्व करने के लिए उत्सुकता दिखाई। दस्तावेजों की पूरी जाँच के बाद, जिग्गी को श्रीमती कौर के साथ प्री-अडॉप्शन फॉस्टर केयर में रखा गया।

हालांकि, सफर ने एक चुनौतीपूर्ण मोड़ तब लिया जब एक जिले के अपर जिला मजिस्ट्रेट ने दत्तक-ग्रहण के आवेदन को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि श्रीमती तवलीन की वित्तीय स्थिरता चिंताजनक है क्योंकि वह अपने पिता की पेंशन और अपनी बहन के सहयोग पर निर्भर हैं।

हालांकि पारिवारिक बंधन के महत्व को पहचानते हुए CARA ने हस्तक्षेप किया और मामले को दिल्ली सरकार के प्रिंसिपल सेक्रेटरी-कम-डिविज़नल कमिश्नर के सामने जेजे अधिनियम की धारा 101 (6) के अनुसार समीक्षा के लिए प्रस्तुत किया।

कमिश्नर ने स्थिति का पूरी तरह से आकलन किया और पाया कि श्रीमती कौर के पास पर्याप्त वित्तीय संसाधन हैं, साथ ही उनकी अपनी आय का स्रोत और विरासत में मिली संपत्ति भी है।

इस नई जानकारी के साथ, दत्तक-ग्रहण आदेश जारी किया गया और प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी की गई।

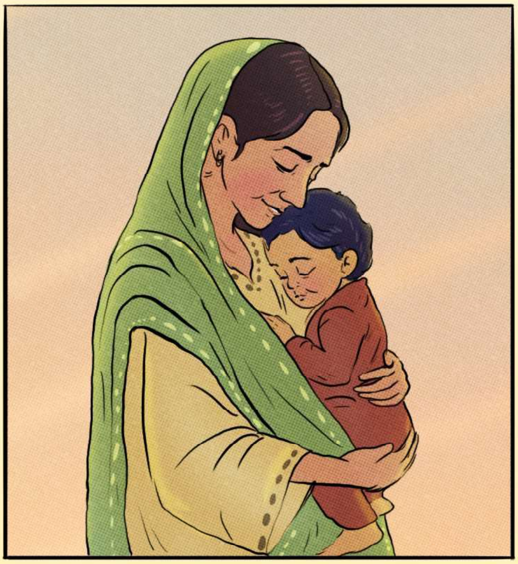

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

CARA

© [2024] केंद्रीय दत्तक-ग्रहण संसाधन प्राधिकरण (CARA)

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी भाग बिना पूर्व लिखित अनुमति के किसी भी रूप में, जैसे कि फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक विधियों द्वारा पुन: उत्पादित, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, सिवाय समीक्षा या शैक्षिक कार्य में संक्षिप्त उद्धरण के उपयोग के।

CARA Help Desk e-mail: carahdesk.wcd@nic.in
CARA Helpline No: 1800-11-1311
8:00 AM to 8:00 PM (Mon-Fri) except Gazetted Holidays
Website: https://cara.wcd.gov.in/

ये कहानियां बच्चों के प्रति लगाव से दत्तक परिवारों और एजेंसियों में जन्मे समर्पण को उजागर करती हैं, जिससे सुनिश्चित हो सका कि हर बच्चे को एक खुशहाल परिवार मिले। कानूनी कारणों से वास्तविक नाम बदल दिए गए हैं।

किलकारियाँ

बाल दत्तक-ग्रहण की प्रेरक कहानियाँ

केंद्रीय दत्तक-ग्रहण संसाधन प्राधिकरण
Central Adoption Resource Authority
महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार
Ministry of Women & Child Development,
Government of India
सत्यमेव जयते

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
नए समाज की ओर
Towards a new dawn
CARA